Paper_II

Dr [illegible]
Deptt of sociology
B.A Part I (Hons)

समाजशास्त्र के क्षेत्र में मानवशास्त्रियों का काफी बोलबाला था।

इसके अनुरूप पाश्चात्य विद्वानों की कृतियों से काफी भारतीय लोग प्रभावित हुए और एक नए बुद्धिजीवी वर्ग का उदय हुआ। इनमें से कुछ लोगों ने अन्य विषयों के अलावा, भारतीय धर्म, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषयों में विशेष रुचि दिखाई। वे लोग प्रायः उच्च जाति और जमींदार परिवार से जुड़े हुए थे। जो आर्थिक रूप से सुदृढ़ तथा सामाजिक दृष्टि से जागरूक थे। उन्होंने भारतीय महाविद्यालयों तथा इंग्लैंड में जाकर उच्च शिक्षा ग्रहण की तथा अपने ढंग से भारतीय समस्याओं पर विचार आरंभ कर दिया। प्रारंभ में ये बुद्धिजीवी अंग्रेजी शासन के समर्थक थे और अंग्रेजों की मदद से भारतीय समाज में सुधार तथा अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार प्रसार के [illegible]। उस काल के विद्वानों को मुख्यतः दो भागों में बांटा जा सकता है —

- राष्ट्रवादी
- [illegible]वादी

भारत में समाजशास्त्र की वास्तविक शुरुआत [illegible] की बम्बई विश्वविद्यालय में हुई। इस [illegible] अर्थशास्त्र के साथ एक वैकल्पिक पत्र के [illegible]। वहां 1919 में नागरिकशास्त्र के साथ [illegible] संयुक्त विभाग स्थापित किया गया [illegible] जो एक नगरीय समाजशास्त्री थे [illegible]। बाद में इस विभाग से जी. एस. घुर्ये [illegible] जैसे लोग जुड़े। पर ये लोग [illegible] ही थे। इनका प्रशिक्षण इंग्लैंड [illegible] हुआ था।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner